

**Loan/given to Bombay Bur mail Trading Corporation Limited by UTI and Commercial Banks**

1668. SHRI BIR BHADRA PRATAP SINGH;

SHRI RAJUBHAI A. PARMAR;

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Bombay Burmah Trading Corporation Limited an associate company of Bombay Dyeing obtained a loan of Rs. 3 crores in 1985-86, Rs. 1 crore from Unit Trust of India and Rs. 2 crores from commercial banks;

(b) if so, whether it is a fact that the same loan was passed on to another subsidiary company known as Kachhaldara Trading Limited;

(c) if so, what are the details of the use made of the loan amount which was passed on to Kachhaldara Trading Limited from Bombay Burmah Trading Corporation; "and

(d) whether it is legitimate to use loan for a purpose other than for which it is raised?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF ECONOMIC AFFAIRS IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI EDUARDO FALEIRO): (a) to (d) The information is being collected and will be laid on: the Table of the House.

**आयकर की वसूली**

1669. श्री शरद यादव : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार ने 1984 से आयकर के माध्यम से प्रतिवर्ष कितना-कितना धन वसूल करने का लक्ष्य रखा था ;

(ख) क्या यह सच है कि सरकार इस लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रही है ;

(ग) क्या सरकार ने रुपयों में आयकर की चोरी की मात्रा का पता लगाने के लिए कोई सर्वेक्षण कराया है ; और

(घ) यदि हां, तो यह अनुमानित राशि कितनी है तथा सरकार ने इसकी वसूली के लिए क्या-क्या कदम उठाये हैं ?

वित्त मंत्रालय में राजस्व विभाग में राज्य मंत्री (श्री अजित पांडे) : (क) और (ख) :

(करोड़ रुपयों में)

वित्तीय वर्ष	बजट अनुमानों के रूप में निर्धारित लक्ष्य	वास्तविक वसूलियां
1984-85	4314.00	4483.66
1985-86	4816.00	5374.30
1986-87	5711.00	6038.01
1987-88	6382.00	6644.00

(अनन्तिम)

उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चल सकता है कि वास्तविक वसूलियां सभी चार वर्षों के बजट अनुमानों से अधिक हैं ।

(ग) और (घ) देश में परिचालन में काले धन के कोई अधिकृत अनुमान उपलब्ध नहीं हैं । तथापि, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अनुरोध पर, राष्ट्रीय सार्वजनिक वित्त और नीति संस्थान ने भारत में काले धन की अव्यवस्था के कुछेक पहलुओं का अध्ययन किया था । मार्च, 1985 में प्रकाशित "ऐसपेक्ट आफ दि ब्लैक इकॉनामी इन इंडिया" नामक अपनी रिपोर्ट में, उन्होंने वर्ष 1983-84 के लिए काले धन की राशि 31,584 करोड़ रुपए से 36,786 करोड़ रुपए के बीच आंकी थी । तथापि, लेखकों ने यह स्वीकार किया कि उनके द्वारा लगाए अनुमान बहुत से पूर्वानुमानों और मोटे अनुमानों पर आधारित हैं और प्रत्येक को चुनौती दी जा सकती है ।